ASIAN JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TECHNOLOGY Vol. 9 (3), July 2019: 20-21
Website: http://www.tspmt.com
ISSN (Print) : 2249-7374
ISSN (Online): 2347-4947
JIF (ISRA) : 4.183
RESEARCH ARTICLE

वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप तथा सुधार के लिए विचार एवं प्रतिक्रियायें

अमिता जैन
शिक्षा विभाग,जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (नागौर)
Email: amitajainjuly1@gmail.com

Received: 10th May 2019, Revised: 21st May 2019, Accepted: 25th May 2019

सारांश

पिछले कुछ समय से शिक्षा के गिरते हुए स्तर से शिक्षाविद् ही नहीं सामान्यजन भी चिन्तित है। इस समस्त परिदृश्य पर समीक्षात्मक दृष्टि डालें तो लगता है कि शिक्षा का संख्यात्मक विकास हुआ है, पर गुणात्मक विकास नहीं। वस्तुतः विद्यार्थी साक्षर तो हो गए, पढना–लिखना जानते हैं, पर समाज के आदर्श नागरिक नहीं बने हैं। माध्यमिक शिक्षा की स्तरहीनता के अनेक कारण हो सकते हैं यथा शिक्षा का जीवनोपयोगी न होना, व्यावसायिक आत्मनिर्भरता का आधार तैयार न कर पाना, वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप ज्ञान–सम्प्रेषण का अभाव, पाठ्य सामग्री का भावी समाज के अनुरूप न होना, स्तरीय अनुसंधानों की उपभोक्ताओं को जानकारी न होना आदि। आज शिक्षा संस्थानों में जो प्रक्रियात्मक खानापूर्ति हो रही है, उसे 'शिक्षा' से सम्बोधित नहीं किया जा सकता। छात्र की सफलता तथा उपलब्धि उनकी सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। शिक्षण अधिगम में उनकी सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए उनकी रूचि, गति, समझ पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। अभिक्रिया तथा संवाद विमुख कक्षाओं में ऐसी स्थिति बनाना सम्भव नहीं होता।

सूचक शब्दः *माध्यमिक शिक्षा, स्तर, आदर्श नागरिक, शिक्षा*

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में बोर्ड द्वारा महाविद्यालयों के शिक्षकों, विद्वानों की सहायता ली जाती है, इस कार्य में माध्यमिक शिक्षा से सीधे जुड़े अनुभवी अध्यापकों की सहायता ली जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से छात्रों की मनोवैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी चाहिए। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के निम्न गुणात्मक के लिए कुछ अंशों में पर्यवेक्षण व्यवस्था भी उतरदायी है। पर्यवेक्षण के लिए अधिकारी जब विद्यालय में हों तो उन्हें शिक्षकों की समस्याएँ सुननी चाहिए। विद्यालय में शिक्षकों को ऐसे अधिकाधिक अवसर दिये जाने चाहिए, जिसमें वे छात्रों से प्रगाढ वैयक्तिक सम्बन्ध बना सकें तथा बनाये गए सम्बन्धों का निर्वाह भी हो। ये वैयक्तिक सम्बन्ध ही बालकों को सुयोग्य नागरिक बनाने में सहायक होंगे। बालक घर पर किसके साथ रहता है ? घर पर उसकी गतिविधियां क्या हैं ? अभिभावकों से समय–समय पर यह जानकारी ली जानी चाहिए। बालक की विद्यालय में सम्प्राप्ति कैसी है ? यह जानकारी भी उन्हें दी जानी चाहिए, जिससे वे सजग रहकर बालक के विकास में रूचि लें। बालक के भावी जीवन में, उसके व्यावसायिक तैयारी में उनकी महत्त्वपूर्ण ही नहीं निर्णायक भूमिका होती है। इन सन्दर्भों में वस्तु स्थिति जानने के लिए, समस्या को लेकर उनके कारण जानकर निदान खोजने के लिए तथा सुधार के लिए विचार एवं प्रतिक्रियायें मांगी गई जो यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

शिक्षक नैदानिक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण की तकनीक में निष्णात

माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का माध्यम है, सिंह द्वार भी जिससे निकलकर बहुसंख्यक छात्रों के लिए जीविकोपार्जन का साधन बनती है। सम्भवतः इसीलिए अधिकतर आयोगों के अनुसार शिक्षा के इस स्तर को प्रभावी एवं स्वयं में पूर्ण बनाने का अनुसरण करना ही एक प्रक्रिया है तथा प्रतिफल भी। जिस प्रकार प्रबंधन विज्ञान में गुणवत्ता का आशय पूर्व निर्धारित विशिष्टताओं के अनुरूप वस्तु या उत्पाद का निर्माण करना होता है, उसी प्रकार शिक्षा में गुणवत्ता का तात्पर्य पूर्व निर्दिष्ट उद्देश्यों के अनुरूप छात्रों की उपलब्धि सुनिश्चित करना होता है। ज्ञान, भावना और क्रिया का समेकित विकास ही विद्यार्थी की उपलब्धि का निर्धारक होता है। केवल जानकारी या ज्ञान के क्षेत्र की उपलब्धि को शिक्षा के स्तर का सम्यक् सूचक मानना अनुचित है। शिक्षा प्रक्रिया का ज्ञान शिक्षक में छात्र के प्रति सरोकार अथवा उसके भविष्य की चिंता का सूचक है। वस्तुतः उपलब्ध साधनों का इष्टतम उपयोग ही नहीं किया जाता। शिक्षकों और शिक्षाविदों को याद रखना चाहिए कि साधनों से बड़ा सरोकार, ज्ञान से बडा संस्कार और ढंग से बड़ा विचार होता है। अभावग्रस्त घर परिवार हो या अन्य संस्थान, हर जगह सरोकार, संस्कार तथा विचार क्षतिपूर्ति के सशक्त साधन होते हैं। शिक्षा मूलतः एक नैतिक उद्यम तथा सांस्कृतिक अभियान है। नैतिकता की नाव बढ़ रहे पानी को शिक्षा के पम्प से उलीच कर शिक्षा और समाज में स्तर और गुणवत्ता बहाल की जा सकती है, इसीलिए आज चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में ज्ञान तथा कौशल से बढकर अभिवृतियों एवं आचरण का परिष्कार महत्त्वपूर्ण हो गया है।

शिक्षा की अपेक्षा परीक्षा महत्त्वपूर्ण

आज शिक्षा में व्याप्त विषमता को दूर करने की ही नहीं पुष्ट करने की तरकीबें सोची जाती हैं, जिससे जनसाधारण में असंतोष बढ़ता है। शिक्षा के स्तर के लिए अनेक आयाम उत्तरदायी हैं। सामान्य लोग इनमें से परीक्षाफलों पर भी अधिक ध्यान देते हैं। यदि आज की माध्यमिक परीक्षा के परिणाम देखें तो उसके दो रूप दिखाई देते हैं एक ओर तो जहाँ 70% अंक पाने वाला भाग्यशाली विद्यार्थी खोजने पर मिलता था वहाँ अब 90%-95% या इससे अधिक पाने वालों की संख्या

इतनी अधिक होती है कि आगामी अनेक पाठ्यक्रमों में प्रवेश 90% पर ही बन्द हो जाता है इन विद्यार्थियों पर गर्व किया जाता है। पर एक स्थिति और है वह यह है कि कुल विद्यार्थियों में इनका प्रतिशत कितना है ? ऐसे विद्यार्थी 1–1.5% ही होते हैं। इनसे अधिक लगभग 45% विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिन्हें उत्तीर्ण तो घोषित किया जाता है, पर प्राप्तांक कम होने के कारण प्रगति के सभी दरवाजे बन्द मिलते हैं। संख्या में इससे भी अधिक करीब 50% ऐसे विद्यार्थी होते हैं जो कक्षा 6–9 तक नियमित पढाई करते हैं और प्रतिवर्ष पास होने के बाद भी माध्यमिक परीक्षा में फेल घोषित कर दिए जाते हैं। ये तो शिक्षा जगत का औसत प्रतिशत है। एक–एक विद्यालय का परीक्षा परिणाम देखें तो स्थिति और भी निराशाजनक हो सकती हैं। यह तर्क दिया जा सकता है कि परीक्षाफल शिक्षा के स्तर का पर्याय कदापि नहीं पर बहुत ही हल्का सा स्थूल तथा मूर्त संकेत है। इसके दूसरी ओर ऐसा मानने का पर्याप्त आधार है कि शिक्षा के स्तर का मुख्य सूत्र शिक्षक के पास है और मुख्य सरोकार भी शिक्षक से ही है। शिक्षक की शक्ति और शिक्षा की प्रक्रिया में उसकी केन्द्रीय भूमिका को ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

आशा की किरणः राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

देश का विकास वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। समाज शिक्षा से जो अपेक्षाएं करता है, आज की शिक्षा उन अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रही है। दूसरी ओर शिक्षकों का कहना है कि समाज शिक्षा से अपेक्षा तो करता है, परन्तु गिरावट के लिए समाज ही सबसे अधिक जिम्मेदार है। कुछ भी हो, शिक्षा का कार्य व्यक्ति सुधार तथा राष्ट्र निर्माण का है। यह कठोर सत्य शिक्षक को स्वीकारना होगा। आज की शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है। किसी भी स्तर पर शिक्षा देने या ग्रहण करने का प्रमुख लक्ष्य परीक्षा उत्तीर्ण करना तथा अंक प्राप्त करना है, न कि तदनुरूप अपेक्षित व्यवहार में परिवर्तन और माध्यमिक शिक्षा भी अपवाद नहीं है। माध्यमिक शिक्षा की स्तरहीनता के अनेक कारण हैं, यथा–सकारात्मक मूल्यों के विकास की अक्षमता, विभिन्न राज्यों की शिक्षा व्यवस्था में एकरूपता का अभाव, आदर्श शिक्षकों तथा प्रभावी शिक्षण–प्रशिक्षण की कमी, शिक्षकों द्वारा आचारसंहिता का पालन न करना, शिक्षा या शिक्षण प्रक्रिया का मूल्यांकन केन्द्रित होना आदि। वर्तमान सामाजिक सन्दर्भों से विकसित हुए कुछ कारण और भी हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। यथा बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षकों का तैयार न होना, एक ही स्थान पर लम्बे समय तक सेवा में रहने की इच्छा, अन्य व्यवसायों की तरह शिक्षकों का अतिरिक्त आय के प्रयत्नों में लिप्त होना, शिक्षा में केवल सैद्धान्तिक पक्ष पर बल, मूल्यांकन में विश्वसनीयता का अभाव तथा कक्षाओं में विद्यार्थियों की अधिक संख्या आदि। भारत सरकार ने 1993 में अच्छे शिक्षक तैयार करने के लिए, शिक्षक–शिक्षा का सन्तुलित विकास करने के लिए, संविधान द्वारा आचारसंहिता का पालन करने के लिए, आदर्श शिक्षक निर्माण तथा शिक्षक–प्रशिक्षण की प्रभावोत्पादकता के सन्दर्भ में आशा की किरण जगायी है।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत राजस्थान सहित कई अन्य राज्यों में व्यावसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू किया गया, पर आज तक इन विषयों के अध्यापक उपलब्ध नहीं हो पाये। उचित वर्कशॉप के अभाव में व्यावसायिक शिक्षा उद्देश्य से भटक गई लगती है। माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए कारगर एवं विश्वसनीय शोधों का अभाव है । जो शोध हो रहे हैं, वे सतही हैं। माध्यमिक शिक्षा में सुधार के लिए स्तरीय शोधों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। सुधार के लिए दृढ़ संकल्प आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहूजा राम (2000): सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. गुप्ता आशा (2011): उच्चतर शिक्षा के बदलते आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वम निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. आहूजा राम (2014): सोशियल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
4. महाजन संजीव (2014): सामाजिक समस्याएँ, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. राज विवेक (2014): समकालीन भारतीय मुद्दे (समस्या एवं समाधान) सिविल सर्विसेज टाइम्स, नई दिल्ली।
6. शर्मा जी.एल. (2015): सामाजिक मुद्दे रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।